परंपरागत प्राकृत व्याकरण की समीक्षा और अर्धमागधी (फोल्डर नं. ००१४३६)

मुख्य टाइटल
प्रकाशकीय
प्रस्तावना
संदर्भ ग्रंथ संकेत
अनुक्रमणिका
१. भरतमुनि और प्राकृत भाषा की उत्पत्ति ---------- १-८
२. सामान्य प्राकृत भाषा में मध्यवर्ती त=द ---------- ९-१५
३. प्राकृत में मध्यवर्ती प और व ---------- १६-२१
४. मध्यवर्ती अल्पप्राण व्यंजनों का प्रायः लोप ---------- २२-३१
५. मध्यवर्ती उद्वृत्त स्वर के स्थान पर य श्रुति की यथार्थता ---------- ३२-३७
६. अनुनासिक व्यंजन ङ् और ञ् का अनुस्वार में परिवर्तन ---------- ३८-४२
७. प्राचीन प्राकृत भाषा में आद्य नकार या णकार ---------- ४३-५०
८. प्राचीन प्राकृत भाषा में मध्यवर्ती नकार ---------- ५१-६८
९. प्राचीन प्राकृत भाषा में ज्ञ=न्न या ण्ण ---------- ६९-७५
१०. प्राचीन प्राकृत भाषा में ण्य, न्न न्य और र्ण का न्न या ण्ण ---------- ७६-८१
११. -स्सिं और –म्हि सप्तमी एकवचन के प्राचीन विभक्ति प्रत्यय ---------- ८२-८७
१२. कुछ अन्य विभक्ति-प्रत्यय ---------- ८८-११३
१३. प्राकृत भाषाओं में मध्यवर्ती व्यंजन ळ ---------- ११५-१२२
१४. अर्धमागधी के दो स्वरूप-प्राचीन और उत्तरवर्ती ---------- १२३-१२९
१५. मूल अर्धमागधी भाषा के यथा-स्थापन में विशेषावश्यक-भाष्य की जेसलमेरीय ताडपत्र की प्रति में भाषिक-दृष्टि से उपलब्ध प्राचीन पाठों द्वारा एक दिशा-सूचन ---------- १३०-१४६
अक्षरों की प्राचीन लेखन-पद्धति और नकार में णकार के भ्रम की संभावना ---------- १४७
कतिपय पूर्व-प्रकाशित इस ग्रंथ के अध्यायों के संदर्भ ---------- १४८
संदर्भ-ग्रंथ ---------- १४९
शुद्धि-पत्रक ---------- १५१
हमारे प्रकाशन ---------- १५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org